तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अर्स।
कह्या तुम भी उतरे अर्स से, यों दई सोभा अरस-परस।। ३२ ।।

ऐसे अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श कहा है और यह भी कहा है कि तुम भी अर्श से उतरकर खेल में आए हो। इस तरह से हमारी और श्री राजजी महाराज की अरस परस (परस्पर) की महिमा जानी गई।

ए खावंद काहूं न पाइया, खोज खोज थके सब मिल।
चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल।। ३३ ।।

चौदह लोकों के सभी लोग खोज-खोजकर थक गए, परन्तु किसी को भी पारब्रह्म नहीं मिले। चौदह तबकों की सपने की झूठी अक्ल उन तक नहीं पहुंचती।

सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे।
चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए।। ३४ ।।

उस अखण्ड परमधाम की पहचान श्री प्राणनाथजी ज़ाहिर कर दिखा रहे हैं। चौदह लोकों के चारों तरफ से पारब्रह्म मोमिनों को शहरग (प्राण नली) से भी नजदीक है।

हांसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक।
चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर हमसे बहुत बड़ी हंसी की है। जिस पारब्रह्म को चौदह लोकों के स्वामी नहीं पा सके उसे हमें हमारे पास दिखा दिया।

महामत कहे हंसे हक, देख मोमिनों हाल।
आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनो (सुन्दरसाथजी)! की ऐसी हालत देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और इस संसार में सब इच्छा पूरी करके घर ले चलने के वास्ते आए हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ४९४ ।।

जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हम दुनियां की झूठी चतुराई नहीं पढ़े हैं, परन्तु हकीकत और मारफत के ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी और रसूल मुहम्मद साहब के कहे वचनों के अनुसार इनके भेद खोलती हूं।

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ़या बनी आदम।
एती सुध किन न परी, कहां खुदा कौन हम।। २ ।।

शुरू से लेकर आज तक संसार के लोगों ने इस पारब्रह्म की बहुत खोज की, परन्तु किसी को यह खबर नहीं हुई कि वह पारब्रह्म कौन है और हम कौन हैं?

Nijanand App

कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम।
सुध न खसम रसूल की, नहीं गिरो की गम।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा खेल दिखाया है कि यहां सपने की बुद्धि होने के कारण से अपने और पराए की सुध नहीं रही, न अपने धनी की खबर रही और न रसूल साहब पैगम्बर की ही खबर रही। हमारे सुन्दरसाथ कौन कहां हैं इसकी खबर नहीं रही।

कौन रूहें कौन फरिस्ते, कौन आदम कौन जिन।
पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टियां कौन हैं, ईश्वरीसृष्टि कौन हैं, आदमी कौन हैं और भुवर्लोक में रहने वाले पिशाच कौन हैं? इसे जानने के लिए वेद और कतेब को लोगों ने पढ़ा, परन्तु दिल के संशय नहीं मिटे।

अपनी अपनी खोजिया, पर पाया नहीं खुदाए।
थके सब नासूत में, पोहोंचे नहीं इसदाए।। ५ ।।

सबने अपने धर्म-ग्रन्थों को खोजा, पर पारब्रह्म को नहीं पाया। सब माया के मृत्युलोक में ही थक गए। जिसने सृष्टि पैदा की है उसका ही पता नहीं चला।

आब हैयाती न पाइया, दौड़या सिकंदर।
काहूं न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर।। ६ ।।

सिकन्दर बादशाह ने भी बहुत खोजा, परन्तु अखण्ड अमृत (जागृत बुद्धि का ज्ञान) नहीं पा सका। सभी पैगम्बर कहते हैं कि उस अखण्ड ठिकाने की खबर किसी को नहीं हुई।

आप राह अपनी मिने, ढूंढ़या सब फिरकन।
कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन।। ७ ।।

सभी सम्प्रदाय वालों ने अपने गुरुओं के बताए हुए रास्ते पर चलकर खोजा, किन्तु सभी कहते हैं हमें वह अखण्ड ठिकाना नहीं मिला।

कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल।
छोड़ सुरिया सितारा, कोई आगूं न सके चल।। ८ ।।

संसार के लोग मृत्युलोक का और बैकुण्ठ का विवरण अपनी अक्ल से करते हैं, परन्तु सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को उलंघकर कोई आगे नहीं जा सका।

जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम।
खुद खबर पाई नहीं, ताथें पड़े सब भरम।। ९ ।।

सभी धर्म पंथ वालों ने अपने धर्मग्रन्थों के जाहिरी अर्थ लिए और शरीयत तथा कर्मकाण्ड में अपने आपको बांध लिया। उन्हें अपनी आत्मा की पहचान नहीं हो पाई और सभी संशय में पड़े रहे।

लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान।
और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान।। १० ।।

हिन्दू, मुसलमान दोनों धर्म वाले लड़-लड़कर अलग हो गए। दुनियां में और बहुत धर्म वाले हैं। सभी के अन्दर अहंकार की भावना है।

Nijanand App

माएनें ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार।
फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार।। ११ ।।

सभी सम्प्रदाय वालों ने केवल शब्दार्थ लिए अपने ज्ञान के अहंकार में सब पारब्रह्म से दूर हो गए। वह एक-दूसरे के देखादेखी होड़ में चल रहे हैं।

कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम।
सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम।। १२ ।।

सभी कहते हैं कि सबके शरीर इन्द्रियां एक सी हैं और एक जैसे प्राण हैं। सभी कहते हैं कि पारब्रह्म एक है, पर सभी अपनी-अपनी रीति, रस्म, रिवाजों में लड़ रहे हैं।

क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर।
कहे सब बिध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर।। १३ ।।

कयामत के निशान कुरान में लिखे हैं। सृष्टि का प्रलय कैसे होगा, यह सब हकीकत लिखी है, परन्तु किसी को खबर नहीं हुई।

क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर।
ए सुध किन को न परी, कौन किताबें क्यों कर।। १४ ।।

लैल तुल कदर की रात क्या है, हौज कौसर तालाब कैसा है, किस धर्मग्रन्थ में इसके बारे में क्या लिखा है, यह खबर किसी को नहीं हुई।

मनसूख करी सब किताबें, रानी सबों की उमत।
ए सुध किन को न परी, जो इनकी क्यों करी सिफत।। १५ ।।

श्री प्राणनाथजी ने आकर सब संसार के धर्मग्रन्थों को रद्द कर दिया और सब धर्मों को भी रद्द कर दिया। कुरान की क्यों प्रशंसा की गई, यह खबर किसी को नहीं हुई।

कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखिर।
कहां से उतरे रूहें मोमिन, कहां से आए काफर।। १६ ।।

यह सब पैगम्बर कौन हैं, किस तरह से आखिरत के समय कयामत के निशान जाहिर होंगे, वह मोमिन कहां से उतरे हैं, जीवसृष्टि कहां से आई, यह सब जानकारी किसी को नहीं हुई।

काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार।
क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार।। १७ ।।

किस तरह से पारब्रह्म खुद न्यायाधीश बनकर न्याय चुकाएंगे, कैसे दुनियां को उनका दर्शन होगा बहिश्तें कैसे कायम होंगी, दोजख में कौन जलेगा, किस पर ब्रह्माण्ड अखण्ड करके, ब्रह्मसृष्टियों को घर ले जाने की जिम्मेदारी है।

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर।
क्यों कर पहाड़ उड़सी, तब कौन नजीक कौन दूर।। १८ ।।

असराफील फरिश्ता संसार में क्यों आएगा, वह सूर क्यों फूंकेगा, किस तरह धर्माचार्य, गादीपति गुरुजन अहंकार के पहाड़ बने बैठे हैं, उनका अहंकार चूर-चूर कर कैसे समाप्त होगा, उस समय पारब्रह्म के कौन निकट, कौन दूर होगा?

Nijanand App

पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर।
सब दुनियां को खाएसी, आजूज माजूज क्यों कर।। १९ ।।

नूह पैगम्बर के लड़के याफिस और याफिस के लड़के आजूज माजूज इस दुनियां को कैसे खाएंगे, अर्थात् नूह वसुदेवजी हैं और उनके लड़के स्याम श्री कृष्णजी हैं, विष्णु भगवान हैं जिन्होंने दिन और रात बनाया है। यही दिन और रात आजूज और माजूज हैं जो मनुष्य की आयु समाप्त करते जाते हैं।

कह्या गधा बड़ा दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान।। २० ।।

कयामत के तीसरे निशान में कौन से दज्जाल का वर्णन है जो एक बड़े गधे पर सवार है। जिसकी कमर तक सात समुद्र का पानी नहीं पहुंचता और सिर उसका आसमान में लगा है। इसे कोई नहीं जानता। यह चौदह लोकों का वैराट ही गधा है और इसके ऊपर बैकुण्ठ में विष्णु भगवान एक आंख से काना, अर्थात् अपने अहंकार में आकर पारब्रह्म की पूजा को छुड़ाकर अपनी पूजा करवाता है। नीचे सात पाताल लोक (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) ही सात समुद्र करके कहे गए हैं।

ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभतूलअर्ज।
ए सुध काहूं न परी, क्यों मगरब सूरज।। २१ ।।

ऊपर की चौपाई में बताए गए दज्जाल की पहचान किसी को नहीं हो सकी और न दाभतुल अर्ज की दाभ (जानवर) तूल (लम्बा) अर्ज (चौड़ा) यानि जिसके सिर पर पहाड़ी बैल जैसे सींग, आंखें सुअर जैसी, कान हाथी जैसे, गर्दन मुर्गे जैसी, छाती शेर जैसी, पीठ गीदड़ (सियार) जैसी और मुख इन्सान जैसा होगा, इसकी पहचान किसी को नहीं हुई। सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम से कैसे निकलेगा जो मुसलमानों के लिए अंधेरे वाला होगा, इसकी खबर किसी को नहीं हुई।

ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत।
माएने मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत।। २२ ।।

मोमिन कितने हैं, जमातें तीन तरह की कैसे हैं? जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टि सबके रहस्य खोले बिना इनके फर्क और यह क्या है पता नहीं लगता।

मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक।
पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक।। २३ ।।

कब्रों में से चौदह लोकों के मुर्दे कैसे उठेंगे? वेद और कतेब को पढ़ने वालों ने खूब खोजा, परन्तु संशय किसी के नहीं मिटे।

जब मोहे हादी सुध दई, ए खुले माएने तब।
तले ला मकान के, खुराक मौत की सब।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने मुझे सुध दी तब यह सब माएने खुल गए और यह निश्चय हो गया कि निराकार सहित सब मिटने वाले हैं।

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून बेचगून।
खुदा याही को बूझहीं, बेसबी बेनिमून।। २५ ।।

दुनियां वाले निराकार को पारब्रह्म समझकर बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून की उपमा देते हैं।

Nijanand App

याही को माया कहें, पैदास सब इन से।
कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने।। २६ ।।

संसार वाले इस निराकार को माया कहते हैं और कहते हैं कि सारी दुनियां इसी से पैदा है। कोई कहता है यह सब कर्म का स्वरूप है और इसी से सब बंधे हैं।

खुदा याही को कहें, याही को कहें काल।
आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल।। २७ ।।

कोई इसी निराकार को ही खुदा कहते हैं। कोई इसी को काल कहते हैं जो आखिरत के समय में सबको खा जाएगा। तब तक सभी को इस खेल में खिला रहा है।

यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन।
यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन।। २८ ।।

कोई इसी को शून्य (बेचून), निर्गुन (बेचगून), निराकार (बेनिमून), निरंजन (बेसबी) कहते हैं और कई इसे खुदा के नाम से जानते हैं। इस तरह से अलग-अलग धर्म वालों ने अलग-अलग नाम रख दिए।

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर।
गोते खाए फना मिने, पोहोंचे न बका नजर।। २९ ।।

दुनियां क्षर, अक्षर को खोज़ती रहती है और इसी निराकार में भटकती रहती है। अखण्ड परमधाम की तरफ किसी की दृष्टि नहीं जाती।

ला याही को केहेवहीं, इला भी याही को।
सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मों।। ३० ।।

वह इसी संसार को ला (मिटने वाला) तथा इसे ही इलाह (अक्षर) कहते हैं और इसी तरह से क्षर और अक्षर के चक्कर में भटकते फिरते हैं।

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर।
सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर।। ३१ ।।

यह दुनियां क्षर, अक्षर को बार-बार खोजती है। यह सब चौदह लोक निराकार सहित मिट जाने वाले हैं। निराकार से आगे कोई एक शब्द भी नहीं बोल पाता।

मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात।
जो मेहर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात।। ३२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि मैं भी इसी अज्ञान के अन्धकार में थी। रात और दिन, ज्ञान और अज्ञान के अन्तर को नहीं समझती थी। श्री राजजी महाराज की मेरे ऊपर कृपा हुई और जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) देने की कृपा मेरे ऊपर हुई। उसका वर्णन अपने भाइयों (सुन्दरसाथ) के वास्ते करती हूं।

जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इला तब।
नूर-मकान नूरतजल्ला, पाई अर्स हकीकत सब।। ३३ ।।

जब मुझे श्री श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी महाराज ने तारतम वाणी से सुध दी तब मैंने क्षर, अक्षर का भेद समझा और अक्षरधाम, परमधाम की सारी हकीकत की जानकारी हुई।

Nijanand App

जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान।
मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरो अपनी जान।। ३४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस विवरण से जिसको ईमान आ जाए वह अपने दिल से मानना। मैं तो अपने सुन्दरसाथ को धाम की निसबत जानकर निश्चित रूप से बताती हूं।

नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब।
तोबा दरवाजे बन्द होएसी, कहा करसी ईमान तब।। ३५ ।।

ईमान से नफा लेने का समय तो अभी है। पीछे तो संसार वाले ईमान लाकर इकट्ठे होंगे। तब पश्चाताप करने पर भी लाभ नहीं होगा, तो उस समय ईमान का क्या फायदा?

ईमान ल्याओ सो ल्याइओ, मैं केहेती हों बीतक।
पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कह्या मोहे हक।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो अपनी बीती बात अपने सुन्दरसाथ को बताती हूं। ईमान लाओ तो लाभ उठा लेना। मुझे धनी का हुकम हुआ है कि सुन्दरसाथ को जाहिर करूं। पीछे तो सब दुनियां ईमान लाएगी।

रूह अल्ला अर्स अजीम से, मो सों आए कियो मिलाप।
कहे तुम आए अर्स से, मोहे भेजी बुलावन आप।। ३७ ।।

परमधाम से श्री श्यामाजी आकर श्री देवचन्द्रजी के तन से मुझे मिले और कहा कि तुम परमधाम से आए हो और श्री राजजी महाराज ने मुझे बुलाने के लिए भेजा है।

तुम आए खेल देखन को, सो किया कारन तुम।
ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम।। ३८ ।।

तुम खेल देखने के लिए आए हो और तुम्हारे लिए ही यह खेल बनाया है। तुम खेल देखकर वापस घर चलो मैं बुलाने के लिए आई हूं।

तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब।
हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब।। ३९ ।।

तुम अपने घर परमधाम (मूल-मिलावा) में बैठे हो और सपने का खेल देख रहे हो। हम तुम्हें खेल दिखाने के लिए आए हैं। खेल देखकर जल्दी घर चलो।

इलम लदुन्नी देय के, खोल दई हकीकत।
सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, कही कायम की मारफत।। ४० ।।

जागृत बुद्धि से तारतम वाणी का ज्ञान देकर सारे रहस्य (छिपे भेद) खोल दिए। अक्षरधाम और परमधाम जो अखण्ड है, की पहचान करा दी।

दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार।
ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार।। ४१ ।।

कुरान की गवाही देकर सब बन्द परदे हटा दिए और यह बताया कि यह लैल तुल कदर की रात्रि का तीसरा अन्तिम भाग देखा है।

Nijanand App

दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे।
चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे।।४२।।

तुम दो बार रात्रि के खेल में आ चुके हो फिर भी तुम्हारी चाही हुई इच्छाएं पूर्ण नहीं हुई थीं।

सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब।
कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब।।४३।।

अब कुरान की गवाही देकर सब परदे खोल दिए (सब रहस्य बता दिए) और यह बताया कि खेल का यह तीसरा भाग है, जो दुःख से भरा है।

इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया।
तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कह्या।।४४।।

रूहें परमधाम में बैठकर ही खेल देख रही हैं। कोई आया गया नहीं है। तुम समझते हो कि घर (परमधाम) दूर है, परन्तु वह प्राण नली (सेहेरग) से भी नजदीक है।

नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया।
सेहेरग से नजीक, अर्स बका में लिया।।४५।।

तुम्हारा अखण्ड घर चौदह लोकों में नहीं हैं। उसको यहीं बैठे-बैठे दिखा दिया। घर सेहेरग से नजदीक है। उस घर (परमधाम) में तुम्हारी आत्मा को लगा लिया।

साहेदी खुदाए की, रूह अल्ला दई जब।
खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब।।४६।।

जब श्री श्यामा महारानीजी ने श्री राजजी के किशोर स्वरूप को बताया तो अन्दर की आत्म दृष्टि खुल गई और धनी के दर्शन हुए।

अन्दर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार।
ल्याए किल्ली अर्स अजीम से, ले बैठाए नूर के पार।।४७।।

साक्षात् धनी ने मेरे अन्दर बैठकर सारे परदे हटाकर सब रहस्य समझा दिए। परमधाम के जागृत बुद्धि के ज्ञान से अक्षर के पार परमधाम पहुंचा दिया।

हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन।
रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन।।४८।।

हमें पारब्रह्म के स्वरूप और अखण्ड धाम का निश्चय हो गया जो आज तक कोई नहीं कर पाया था। श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के तारतम वाणी के ज्ञान से मेरी आत्म दृष्टि खुल गई।

ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी देत।
बैठ बीच ब्रह्मांड के, अर्स बका में लेत।।४९।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी लेने से आत्मा स्वयं अन्दर से गवाही देने लगती है। क्षर के ब्रह्माण्ड में बैठकर ही अखण्ड परमधाम के सुख मिलने लगते हैं।

अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए।
कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए।।५०।।

शुरू से लेकर आज तक इस दुनियां में कोई ऐसा नहीं हुआ जो अखण्ड घर (परमधाम) का तथा पारब्रह्म का यहां दर्शन करा दे।

Nijanand App

जो रूहें अर्स अजीम की, कहूं तिनको मेरी बीतक।
जो हुई इनायत मुझ पर, जिन बिध पाया हक।।५१ ।।

परमधाम के जो सुन्दरसाथ हैं उनको मैं अपनी हकीकत बताती हूं मेरे धनी की कैसे कृपा हुई और मुझे मेरे धनी कैसे मिले?

कायम फना बीच दुनी के, हुती न तफावत।
मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत।।५२ ।।

दुनियां वालों को क्षर-अक्षर के भेद का पता नहीं था। अब मैं अपने हादी श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी की कृपा से सबकी हकीकत बताती हूं।

नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध।
जबरूत लाहूत हाहूत, दई हादी हिरदे बुध।।५३ ।।

मृत्युलोक, बैकुण्ठ तथा निराकार की सुध नहीं थी। अब श्री श्यामा महारानीजी श्री देवचन्द्रजी ने जागृत बुद्धि देकर अक्षर-धाम, परमधाम तथा मूल-मिलावा तक की पहचान करा दी।

ए सुध पाए पीछे, हुआ बेवरा बुजरक।
ज्यों जाहेर मांहें दुनियां, त्यों बातून मांहें हक।।५४ ।।

यह ज्ञान मिल जाने से क्षर और अक्षर के भेद का पता लगा। जैसे संसार में जाहिरी में देखती और सुनती थीं उसी तरह बातूनी में सत (अक्षर) का ज्ञान होने लगा।

बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी।
नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती।।५५ ।।

शरीयत और हकीकत की बन्दगी का पता चला। जितना अन्तर संसार के जीवों में, परमधाम की ब्रह्मसृष्टि में है, उतना ही फर्क जीव और आत्माओं में है।

नासूत बीच फना के, अर्स कायम हमेसगी।
दुनियां ताल्लुक दिल की, रूह मोमिन खुदाए की।।५६ ।।

मृत्युलोक नाशवान है। परमधाम सदा अखण्ड है। दुनियां का दिल संसार में लगा है और मोमिनों का दिल खुदा में लगा है।

एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने।
नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़ें न हठ अपने।।५७ ।।

सब धर्मग्रन्थों में नाशवान क्षर और अखण्ड अक्षर की हकीकत लिखी है। सब लोग यह भी जानते हैं कि उन्हें लाभ किस में है और हानि किसमें है। फिर भी कोई अपनी जिद नहीं छोड़ पाता।

इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर।
फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर।।५८ ।।

इश्क की बन्दगी पारब्रह्म के पास पहुंचाती है। फर्ज की बन्दगी (बन्धन की बन्दगी) खुदा से दूर करती है।

जाहेर मैं केता कहूं, खुदाए का जहूर।
वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर।।५९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तारतम वाणी से पारब्रह्म सभी प्रकार से जाहिर हो गए हैं। इससे ज्यादा मैं क्या कहूं? अपनी खास उम्मत (सुन्दरसाथ) के वास्ते ही यह सब मेरे से कहलवा दिया।

Nijanand App

ऊपर ला मकान के, राह न मौत की तित।
नूर-मकान नूर-तजल्ला, अर्स हमेसगी जित।। ६० ।।

निराकार के पार मौत भी नहीं पहुंचती। वहां पर अखण्ड अक्षर-धाम और परमधाम हैं।

नूर-तजल्ला अर्स में, सूरत साहेब की।
दरगाह बीच रेहेत हैं, रूहें हमेसगी।। ६१ ।।

परमधाम में साक्षात् पारब्रह्म का स्वरूप विराजमान है। इसी पूज्य स्थान में ब्रह्मसृष्टि रहती है।

बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान।
रहें हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान।। ६२ ।।

इन ब्रह्मसृष्टियों की महिमा बड़ी भारी है। इनके समान कोई दूसरा नहीं है। यह सदा से ही श्री राजजी महाराज के साथ रहती हैं। इस ज्ञान से मुझे पता चला कि मैं उस अक्षरातीत की अंगना हूं।

तब मैं दिल में यों लिया, करों कायम चौदे तबक।
मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक।। ६३ ।।

तब मैंने दिल में यह विचार किया कि मैं चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करूं और अपने धनी की जागृत बुद्धि से सबको पारब्रह्म से मिला दूं।

ऐसा जब दिल में आइया, दिया जोस हकें बल।
उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल।। ६४ ।।

जब मन में यह भावना आई तो धाम धनी अक्षरातीत ने भी यह शक्ति प्रदान की। उनकी कृपा से वाणी उतरी जिसमें श्री राजजी महाराज का मूल हुकम भी था कि ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर दो।

ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप।
रूह अल्ला पेहेले दिल मिने, अहमद कियो मिलाप।। ६५ ।।

रसूल साहब जब आए थे तब कुरान में इस बात की भविष्यवाणी कर दी थी। वही मुहम्मद जब रूह अल्लाह श्री श्यामाजी के दूसरे तन, अर्थात् मेड़ता में श्री इन्द्रावतीजी के तन में मिले, तो अहमद कहलाए।

तब खुदाई इलम से, भई सबे पेहेचान।
ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान।। ६६ ।।

तब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबकी (श्री राजजी, श्री श्यामाजी, ब्रह्मसृष्टियों की) पहचान हो गई और हमारा मुहम्मद से क्या सम्बन्ध है यह पता चला। यह भी पता चला कुरान हमारे वास्ते आया है।

सो कुरान मैं देखिया, सब पाइयां इसारत।
हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत।। ६७ ।।

अब उस कुरान को मैंने देखा और सब छिपे भेद खुल गए। मेरे तन से क्या कुछ होना है उसकी जानकारी मिली। मूल परमधाम से खेल में आने से पहले ही श्री राजजी महाराज ने मुझसे दुनियां में क्या काम लेना है, यह भी ज्ञान हो गया।

Nijanand App

जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत।
ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत।। ६८ ।।

यह जो जमात (मोमिनों की खासल खास) पारब्रह्म ने खेल में भेजी है उनको वेद और कतेब की (श्री श्यामाजी, श्री देवजन्द्रजी की और मुहम्मद की) गवाहियां देती हूं जिससे उन्हें अखण्ड परमधाम का आनन्द प्राप्त हो।

एह कायम न्यामतें, दोऊ से जुदी जुदी।
नूर-जमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी।। ६९ ।।

अक्षर और अक्षरातीत के अखण्ड घरों की कुरान और पुराण से दोनों धामों की गवाही दी।

महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई।
कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई।। ७० ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मैं पारब्रह्म के नूर से हूं और ब्रह्मसृष्टियां मेरे भाई हैं। कुरान और हदीसों में उनकी बड़ी महिमा गाई है।

ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक।
बरकत खास उमत की, सब लेसी इस्क।। ७१ ।।

यह कुरान में पहले से ही लिखा है कि वक्त आखिरत को सबके संशय मिट जाएंगे और ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से सब लोग प्रेम-मार्ग पर चलेंगे।

करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम।
साफ दिल सब होएसी, जिनको पोहोंच्या दम।। ७२ ।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से शैतान (अबलीस) के प्रभाव को समाप्त कर देंगे। जिनके दिल में ईमान का बल आ जाएगा। उनके दिल साफ हो जाएंगे।

कहे सब्द सब आगूंही, इत खुदा करसी कजाए।
हिसाब सबन का लेय के, भिस्त जो देसी ताए।। ७३ ।।

कुरान में पहले से लिखा है कि पारब्रह्म (खुदा) स्वयं न्यायाधीश बनकर सबका न्याय चुकाएंगे और सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, मेंहेदी इमामत।
दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत।। ७४ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी तारतम लाएंगे और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी घर का रास्ता बताएंगे। परमधाम की सब ब्रह्मसृष्टियां आएंगी और श्री प्राणनाथजी उनकी प्रशंसा करेंगे।

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर।
आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर।। ७५ ।।

जितने धर्म हैं, सब झूठ की पूजा छोड़ देंगे। दिल के संशय मिटाकर सब निजानन्द सम्प्रदाय में आएंगे।

एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम।
लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम।। ७६ ।।

जिनको इन रहस्यों का पता चल गया, वही निजानन्द सम्प्रदाय में आ गया। श्री श्यामा महारानी जी के तारतम ज्ञान को लेकर निजानन्द सम्प्रदाय के वही सच्चे मानने वाले बने।

Nijanand App

जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए।
इत काम बीच खुदाए के, काहूं दम ना मार्‌यो जाए।।७७ ।।

जो मैंने अभी सोचा उसको श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है। पारब्रह्म के काम में दखल देने का बल किसी का नहीं चलता।

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए।
खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए।।७८ ।।

धनी का हुकम ही ऐसा है जो सबको अपने आप मिला लेता है। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही निश्चित कर रखा है कि कब क्या होगा? इसलिए उससे कोई बाहर नहीं जा सकता।

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर।
हुकम ऐसा कर छोड़या, काहूं करनी न पड़े फिकर।।७९ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने पहले ही से यह निश्चित करके लिखा है कि ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी। ऐसा इसलिए लिखवा दिया कि किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता न पड़े।

महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला अति बुजरक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो श्री राजजी महाराज बड़ी महिमा वाले हैं। इनकी कृपा जिस पर हो जाती है उसे अपने चरणों में ले लेते हैं।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

दोनामा किताब मंगलाचरण

अब कहूं विध निगम, देऊं महंमद की गम।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद, पुराणों की हकीकत और मुहम्मद की पहुंच बताती हूं जिससे मेरे-तेरे झगड़े मिट जाएं, अर्थात् हिन्दू-मुसलमान के झगड़े समाप्त हो जाएं और एक पारब्रह्म की पहचान हो जाए।

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख।। २ ।।

तारतम वाणी से सबके छिपे रहस्यों को खोलती हूं जिससे सारी दुनियां एक हो जाए और माया के भेषों के झगड़े समाप्त हो जाएं। इमाम मेंहदी साहब जागृत बुद्धि से सबके संशय मिटा देंगे। यही विशेषता है।

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद।। ३ ।।

बहुतों ने वेदों को पढ़-पढ़कर पारब्रह्म को खोजा और इसी तरह से कईयों ने कतेब को पढ़-पढ़कर खोजा। कोई भी उनके गुझ (गुप्त) रहस्यों के भेद नहीं पा सका, इसलिए सबको विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार आखिरी जमाने के इमाम मेंहदी साहब के आने का इन्तजार था जो सब ग्रन्थों के छिपे रहस्यों का भेद खोलकर बताएं।

Nijanand App